

गांठदार त्वचा रोग या लंपी स्किन डिजीज : लक्षण ,उपचार एवं बचाव के उपाय

डॉ. राजेश नेहरा, डॉ. जागृति श्रीवास्तव, डॉ. अनिल कुमार लिंबा, डॉ. ममता कुमारी मीणा एवं
डॉ. मुकेश कुमार गुर्जर

पशु पोषण विभाग, पशु चिकित्सा एवम पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर

कुछ दिनों से हमारे देश के विभिन्न भागों में एक संक्रामक रोग, जिसे लंपी स्किन डिजीज कहा जाता है, तेजी से गायों एवं भैंसों में फैल रहा है । यह एक विषाणु जनित संक्रामक रोग है जिसमें पशु के पूरे शरीर पर गांठें हो जाती हैं । इस विषाणु का संबंध भेड़ एवं बकरी माता रोग के विषाणु से है तथा यह रक्त चूसने वाले परजीवी जैसे मच्छर तथा मक्खियों के माध्यम से एक पशु से दूसरे पशु में फैलता है। साथ ही यह पशुओं के चारे ,दाने व शरीर पर अगर घाव हैं तो इसके माध्यम से भी फैल सकता है । हालांकि इस रोग में मृत्यु दर कम (लगभग 10%) होती है, लेकिन दुग्ध उत्पादन बहुत कम हो जाता है।

लक्षण:-

इस रोग के मुख्य लक्षण निम्न प्रकार हैं :-

1. पशु को तेज बुखार आता है जो लगभग 1 सप्ताह तक रह सकता है ।
2. पशु के शरीर पर त्वचा के नीचे स्थित लक्षिका ग्रंथियों में सूजन आ जाती है ।
3. पशु के शरीर पर मोटी मोटी गांठें (लगभग 2 से 4 सेंटीमीटर) हो जाती हैं ।
4. इन गांठों के फटने पर तरल पदार्थ निकलता है ।
5. बाद में गांठें घाव में बदल जाती हैं ।
6. कभी -कभी पशु की आंखों में भी गांठें बन जाती हैं जिससे पशु अंधे हो जाते हैं ।
7. मादा पशुओं में गर्भपात हो जाता है ।
8. दुधारू पशुओं का दुग्ध उत्पादन काफी कम हो जाता है ।
9. घाव में जीवाणु से संक्रमण होने का खतरा रहता है ।
10. इस रोग का संक्रमण काल लगभग 4 से 14 दिनों तक होता है ।

उपचार :-

1. यह एक विषाणु जनित संक्रामक रोग है इसका कोई औषधीय उपचार उपलब्ध नहीं है ।
2. जीवाणु द्वारा फैलने वाले संक्रमण को रोकने के लिए एंटीबायोटिक एवं बुखार , दर्द तथा सूजन को रोकने के लिए ज्वररोधी एवं सूजन रोकने वाली सूजनरोधी दवाइयां दी जाती है ।
3. लगभग 3 सप्ताह में प्रभावित पशु ठीक हो जाता है,लेकिन गांठों के फूटने पर बने घाव पर लगातार एंटीबायोटिक क्रीम लगानी चाहिए ताकि द्वितीय संक्रमण नहीं फैले ।
4. यह एक विषाणु जनित रोग है इसलिए रोग से बचाव ही इसका इलाज है ।
5. ठीक होने पर पशुओं में रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित हो जाती है ।
6. बकरी एवं भेड़ माता रोग की वैक्सीन इस रोग को रोकने में कुछ हद तक उपयोगी है ।

बचाव के उपाय :-

1. यह रोग एक पशु से दूसरे पशु में मच्छरों एवं मक्खियों के काटने के कारण फैलता है इसलिए रोग से प्रभावित पशु को अन्य पशुओं से अलग रखना चाहिए ।
2. पशु आवास में खून चूसने वाले परजीवी मक्खी मच्छर से बचाव के सभी उपाय करने चाहिए ।
3. पशु का तुरंत पशु चिकित्सक से उपचार करवाना चाहिए ।

4. नए खरीदे गए पशु को पशु बाड़े में शामिल करने से पहले लगभग 15 दिनों तक निगरानी में रखना चाहिए ।
5. आवास की साफ-सफाई अच्छी तरह से होनी चाहिए एवं पानी का भराव आस पास नहीं हो जिससे मच्छर एवं मक्खियां नहीं पैदा हो, इसका उचित प्रबंधन करना चाहिए ।